देशभक्ति के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों...पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार शुरू

अकादमिक विचारों और दिमागों को एक साथ लाने के लिए ऐसे सेमिनार की जरूरत पर बल दिया गया

सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों के बारे में वक्ताओं ने सेमिनार में दी जानकारी

जासं, रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में काउंसिल आफ सोशल साइंस रिसर्च के सहयोग से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों...पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक डा विभूति भूषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। इसके बाद स्वागत भाषण सीयूजे के डीन आफ सोशल साइंसेज डा आलोक कुमार गुप्ता ने दिया। उद्घाटन भाषण देते डा राजकुमार कोठारी, प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग डायमंड हार्बर विमेंस यूनिवर्सिटी पश्चिम बंगाल ने रविंद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव से जोड़ा। उन्होंने कहा कि टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे लेकिन उनका विचार गैर-देशी और गैर-भारतीय था। उनका मानना था कि एक देशभक्त होने के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। टैगोर ने स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया लेकिन राष्ट्र के लिए उनकी एक अलग दृष्टि और विचार था।

सीयूजे में आयोजित सेमिनार में मुख्य अतिथि का स्वागत करते कुलपति • जागरण

जापानी शासन व द्वीपों के इतिहास पर चर्चा

डा आलोक गुप्ता ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों के बारे बताया कि कैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में यातनाएं दी जाती थी। साथ ही कहा कि सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। उन्होंने भारत-प्रशांत क्षेत्र में समकालीन समुद्री सुरक्षा से इस विषय की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया। देशभर से आए हुए विभिन्न प्रोफेसरों और शोध विद्वानों ने भी अंडमान और निकोबार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रकट करते हुए रोचक पेपर प्रस्तुत किए। जिसमें एबरडीन की लड़ाई, अंडमानी की अनकही कहानी...अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (एएनआई) का गहरा बहुलवाद और अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों की छाया...आदि विषयों पर चर्चा हुई। शोधकर्ताओं ने अंडमान द्वीप समूह में जापानी शासन, द्वीपों के इतिहास, द्वीपों के वर्तमान सामरिक महत्व और द्वीपों में और उसके आसपास की राजनीति के बारे में बात की।

देश के विभिन्न हिस्सों से जुटे विशेषज्ञ

इस अवसर पर डा देबाशीष नंदी (एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख, राजनीति विज्ञान विभाग, काजी नजरूल विवि, आसनसोल) पश्चिम बंगाल और प्रो उत्तम कुमार जमदग्नि (प्रोफेसर और प्रमुख, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग, मद्रास विवि, चेन्नई, तमिलनाडु) और डा केएम परिवेलन, एसोसिएट प्रोफेसर, स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज, स्कूल आफ स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज के लिए कानून, अधिकार और संवैधानिक शासन, टाटा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, मुंबई ने तीन अलग अलग सत्रों की अध्यक्षता की और संगोष्ठी में सामने आए विचारों की प्रशंसा की। तीसरा सत्र सभी की सुविधा के लिए आनलाइन किया गया। प्रो नीतेश भाटिया ने अंत में सबका धन्यवाद किया।

सीयूजे में अनकही कहानियों पर दो दिवसीय सेमिनार प्रारंभ

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

रांची : अंर्तराष्ट्रीय संबंध विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय ब्राम्बे में काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च द्वारा सह-प्रायोजित,भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया। इससे पुर्व संगोष्ठी का शुभारंभ उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. विभूति भूषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। इसके बाद स्वागत भाषण डॉ. आलोक कुमार गुप्ता (डीन ऑफ सोशल साइंस, सीयूजे) ने दिया। उद्घाटन भाषण डॉ. राजकुमार कोठारी (प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग डायमंड हार्बर विमेंस यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल) ने दिया। इन्होंने रवींद्र नाथ टैगोर के बारे में बात की। रवींद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव से जोड़ा। टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे, लेकिन उनका विचार गैर-प्राच्य थाय गैर-देशी और गैर-भारतीय था। उनका मानना था कि एक देशभक्त होने के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया लेकिन राष्ट्र के लिए उनकी एक अलग दृष्टि और विचार था। वही प्रोफेसर मनोज कुमार ने अकादमिक विचारों और दिमागों को एक साथ लाने के लिए ऐसे सेमिनारों की आवश्यकता पर जोर दिया । डॉ. आलोक गुप्ता ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में आम लोग केवल इतना ही जानते हैं। सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। उन्होंने भारत-प्रशांत क्षेत्र में समकालीन समुद्री सुरक्षा से इस विषय की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया। पूरे भारत से आए हुए विभिन्न प्रोफेसरों और शोध विद्वानों ने भी अंडमान और निकोबार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने अंतर्दृष्टिपूर्ण और रोचक पेपर प्रस्तुत किए।कुछ विषय थे एबरडीन की लड़ाई अंडमानी की अनकही कहानी अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (एएनआई) का गहरा बहुलवाद और अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्तियों की छायाष्य आदि। शोधकताओं ने अंडमान द्वीप समूह में जापानी शासन, द्वीपों के इतिहास, द्वीपों के वर्तमान सामरिक महत्व और द्वीपों में और उसके आसपास की राजनीति के बारे में बात की। इस अवसर पर डॉ. देबाशीष नंदी एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख, राजनीति विज्ञान विभाग, काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल और प्रो. उत्तम कुमार जमदग्नि (प्रोफेसर और प्रमुख, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु) और डॉ केएम परिवेलन (एसोसिएट प्रोफेसर, स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज, स्कूल ऑफ स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज के लिए)कानून, अधिकार और संवैधानिक शासन, टाटा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, मुंबई ने तीन अलग - अलग सत्रों की अध्यक्षता की और संगोष्ठी में सामने आए विचारों की प्रशंसा की।

सीयूजे में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की हुई शुरुआत

सीयूजे में गुरुवार को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में मौजूद अतिथि व अन्य।

रांची, वरीय संवाददाता। सीयूजे के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग की ओर से गुरुवार को काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च के सहयोग से दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की शुरुआत हुई। 'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों' पर सेमिनार आयोजित किया जा रहा है।

पहले दिन संगोष्ठी के संयोजक डॉ विभूति भूषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। स्वागत भाषण डॉ आलोक कुमार गुप्ता (डीन ऑफ सोशल साइंस, सीयूजे) ने दिया। उद्घाटन भाषण डॉ राजकुमार कोठारी ने दिया। उन्होंने रवींद्र नाथ टैगोर के बारे में बात की। रवींद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव से जोड़ा। कहा कि टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे, लेकिन उनका विचार गैर-प्राच्य था। डॉ आलोक गुप्ता ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में आम लोग केवल इतना ही जानते हैं। सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। शोधकर्ताओं ने अंडमान द्वीप समूह में जापानी शासन, द्वीपों के इतिहास, द्वीपों के वर्तमान सामरिक महत्व और द्वीपों में और उसके आसपास की राजनीति के बारे में बात की। इस अवसर पर डॉ देबाशीष नंदी, प्रो उत्तम कुमार जमदग्नि, डॉ केएम परिवेलन आदि ने भी विचार रखे।

- संगोष्ठी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की दी जानकारी
- डॉ आलोक ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला

दैनिक भास्कर रांची 29-04-2022

सीयूजे... डायमंड हार्बर वीमेंस यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ने दो दिवसीय नेशनल सेमिनार को किया संबोधित

टैगोर देशभक्त होने के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं मानते थेः प्रो. कोठारी

सेमिनार के उद्घाटन समारोह में प्रो. कोठारी को सम्मानित करते पदाधिकारी।

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

डायमंड हार्बर वीमेंस यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजकुमार कोठारी ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को आजादी का अमृत महोत्सव से जोड़ा। कहा- टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे। लेकिन, उनका विचार गैर-प्राच्य था, गैर-देसी और गैर-भारतीय था। उनका मानना था कि एक देशभक्त होने के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया, लेकिन राष्ट्र के लिए उनकी एक अलग दृष्टि और विचार था। प्रो. कोठारी गुरुवार को झारखंड सेंट्रल यूनिवर्सिटी झारखंड के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा आयोजित दो दिनी नेशनल सेमिनार के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इसका विषय भारत के स्वतंत्रता आंदोलन, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियां है। सेमिनार के को-ऑर्डिनेटर डॉ. विभूति भूषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। इससे पहले अतिथियों का स्वागत सोशल साइंस डीन डॉ. आलोक कुमार गुप्ता ने दिया।

सावरकर की किताब में है कैदियों के दर्द का उल्लेख

डॉ. आलोक गुप्ता ने सेल्यूलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला। कहा- सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। अध्यक्षता करते हुए एकेडमिक डीन प्रो. मनोज कुमार ने अकादमिक विचारों और दिमाग को एक साथ लाने के लिए ऐसे सेमिनारों की आवश्यकता पर जोर दिया।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों पर सेमिनार का शुभारंभ

स्वदेश ✍ संवाददाता

रांची : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे) में विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग और काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च की ओर से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की अनकही कहानियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ गुरूवार को हुआ। कार्यक्रम में संगोष्ठी के संयोजक डॉ विभूति भूषण विश्वास ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। फिर स्वागत भाषण डॉ आलोक कुमार गुप्ता (डीन ऑफ सोशल साइंस, सीयूजे) ने दिया। उद्घाटन भाषण डॉ राजकुमार कोठारी (प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग डायमंड हार्बर विमेंस यूनिवर्सिटी, पश्चिम बंगाल) ने दिया, जिन्होंने रवींद्र नाथ टैगोर के संबंध में अपना मत प्रकट किया। रवींद्रनाथ टैगोर और उनकी राष्ट्रवाद की अवधारणा को उन्होंने ₹आजादी का अमृत महोत्सव₹ से जोड़ा। टैगोर राष्ट्रवाद के पारंपरिक विचार का पालन नहीं करते थे लेकिन उनका विचार गैर-प्राच्य था; गैर-देशी और गैर-भारतीय था। उनका मानना था कि एक देशभक्त होने के लिए राष्ट्र का हिस्सा होना जरूरी नहीं है। टैगोर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन किया लेकिन राष्ट्र के लिए उनकी एक अलग दृष्टि और विचार था। अध्यक्षीय भाषण प्रोफेसर मनोज कुमार (डीन अकादमिक सीयूजे) द्वारा दिया गया था, जिन्होंने अकादमिक विचारों और दिमागों को एक साथ लाने के लिए ऐसे सेमिनारों की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. आलोक गुप्ता ने सेल्युलर जेल में बंदियों पर किए गए अत्याचारों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में आम लोग केवल इतना ही जानते हैं।सावरकर भी वहां दस साल के लिए जेल गए थे और अपनी किताब में उन्होंने और अन्य कैदियों के दर्द के स्तर का उल्लेख किया है। उन्होंने भारत-प्रशांत क्षेत्र में समकालीन समुद्री सुरक्षा से इस विषय की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया। पूरे भारत से आए हुए विभिन्न प्रोफेसरों और शोध विद्वानों ने भी अंडमान और निकोबार से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने अंतर्दृष्टिपूर्ण और रोचक पेपर प्रस्तुत किए। इस अवसर पर डॉ देबाशीष नंदी (एसोसिएट प्रोफेसर और प्रमुख, राजनीति विज्ञान विभाग, काजी नजरूल विश्वविद्यालय),आसनसोल, पश्चिम बंगाल और प्रो. उत्तम कुमार जमदग्नि (प्रोफेसर और प्रमुख, रक्षा और सामरिक अध्ययन विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु), और डॉ केएम परिवेलन (एसोसिएट प्रोफेसर, स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज, स्कूल ऑफ स्टेटलेसनेस एंड रिफ्यूजी स्टडीज के लिए) कानून, अधिकार और संवैधानिक शासन, टाटा सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, मुंबई) ने तीन अलग अलग सत्रों की अध्यक्षता की और संगोष्ठी में सामने आए विचारों की प्रशंसा की। तीसरा सत्र सभी की सुविधा के लिए ऑनलाइन किया गया। इसके बाद प्रोफेसर नीतेश भाटिया की ओर से औपचारिक धन्यवाद दिया गया जिसके बाद सेमिनार के पहले दिन का सफल समापन किया गया।सेमिनार शुक्रवार को भी चलेगा।